धर्मयुग
वर्ष: ३६ १३ जनवरी १९८५ अंक: २

हारमोनियम में सुरों की जादूगरी

पं. मनोहर चिमोटे: हारमोनियम को प्रतिष्ठित करनेवाले संगीतकार

बिरला मातुश्री सभागार में शास्त्रीय संगीत का वातावरण बना हुआ है और समय है रात्रि के आठ बजे का. रसिकगण बैठे हैं. बड़ी प्रतीक्षा में हैं, आतुर हैं कि एक ऐसे वाद्य का कार्यक्रम शुरू हो, जिसे सुना और जाना तो बहुत है, लेकिन उस वाद्य से शास्त्रीय संगीत की कौन सी जगह बनेगी अथवा कौन सी विशेष बात पैदा होगी, यह पता नहीं. यह वाद्य है हारमोनियम, जिससे सभी लोग परिचित हैं. एक मामूली बाजा, जिसे तुच्छ समझा जा रहा है. श्रोताओं में, मैंने देखा कि कत्थक-सम्राज्ञी सितारा देवी, कैराना घराना के प्रसिद्ध गायक पं वासवराज राजगुरु तथा संतूर के जाने-माने कलाकार पं. शिवकुमार शर्मा आदि, जो शास्त्रीय संगीत के तीनों अंगों—नर्तन, गायन तथा वादन—के मर्मज्ञ हैं, वहां मौजूद थे.

यह अच्छी बात नहीं है कि स्वर-संगीत की दुनिया से संबद्ध किसी वाद्य को, जिसमें सुर बसते हैं, तुच्छ समझा जाये. ऐसा करना संगीत के प्रति अन्याय नहीं तो क्या है? किसी वाद्य ने किसी का क्या बिगाड़ा है? मैं मानता हूं कि हारमोनियम घर-घर में पाया जा सकता है, पर ऐसा नहीं कि उसे हर कोई बजा ले, और बजा भी ले, तो उसमें महारत हासिल कर ले. यह संगीत की दुनिया की चीज है और इसमें काम करनेवाले बहुत कुछ कर सकते हैं, और कर भी रहे हैं. अगर हारमोनियम शादी-ब्याह के घरों में 'बन्ना' गा सकता है, बच्चा पैदा होने पर 'सोहर' बजा सकता है, देश-प्रदेश के लोकगीत गा सकता है और सड़क का भिखारी इसे बजा कर चार पैसे कमा सकता है, तो शास्त्रीय संगीत का माहिर, मंच पर इसके स्वरों के साथ खेल सकता है और रसिकों को अपने कला-कौशल से मुग्ध भी कर सकता है. चाहे इसे संगत के लिए रख लें, साज मिलाने के लिए रख लें या इससे शास्त्रीय राग-रागिनियां बजा कर एक स्वतंत्र वाद्य का रूप प्रस्तुत करें—यह तो संगीतज्ञ पर निर्भर करता है कि वह इस वाद्य में कितना डूब सकता है.

इसी हारमोनियम के जादूगर हैं पं. मनोहर चिमोटे, जिनका कार्यक्रम सुनने का सौभाग्य मुझे ८ दिसंबर, १९८४ को बिरला हॉल, बंबई में मिला. वैसे हारमोनियम को किसी जमाने में सिर्फ संगत के लिए उपयोगी माना जाता था, पर पंडित जी ने इसे दूसरा ही रूप दिया है. इसे उन्होंने एक स्वतंत्र वाद्य के रूप में, जो शास्त्रीय संगीत प्रदर्शित करने की क्षमता रखता है, ऊपर उठाया है. जिस प्रकार शहनाई को दर्जा दिया है उस्ताद बिस्मिल्लाह खां ने, वंशी-बांसुरी को स्व. पन्नालाल घोष तथा पं. हरिप्रसाद चौरसिया ने, वायलिन को पं. वी. जी. जोग ने और संतूर को पं. शिवकुमार शर्मा ने, उसी प्रकार हारमोनियम को मंच पर स्वतंत्र रूप से लाने का श्रेय पंडित जी को है.

हारमोनियम के नये-नये आयाम

जैसे कंठ-संगीत में खयाल गाया जाता है, पंडित जी ने हारमोनियम पर राग मारवा, जो एक कठिन और गंभीर राग है, बजा कर अपना कार्यक्रम आरंभ किया. उन्होंने राग मारवा पहले विलंबित, फिर द्रुत में प्रदर्शित किया—पूरे सवा घंटे तक. इसमें जितना भी कला-कौशल एक संगीतज्ञ दिखा सकता है, राग की महिमा को रखते हुए, उसकी बारीकियां दिखाते हुए, उसके आलाप, तान इत्यादि सभी कुछ पंडित जी ने अपने हारमोनियम के माध्यम से प्रदर्शित किये. एक संगीतज्ञ अपने कार्यक्रम में राग की स्थापना का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, और इसकी स्थापना पंडित जी ने बहुत ही अच्छे ढंग से की और राग को परत-दर-परत खोलते गये.

बाद में ठुमरी की बारी आयी. हारमोनियम पर ठुमरी के क्या कहने! जैसे हारमोनियम ठुमरी के लिए ही बना हो! और ठुमरी के लिए हारमोनियम में कितनी जगह है, यह भी पंडित जी ने अपने कार्यक्रम में दिखा दिया.

मेरे विचार से, वाद्य में यदि गायकी का अंश आ जाये, तो संगीत और भी कर्णप्रिय लगता है. इसकी रंजकता 'गत अंग' के मुकाबले और भी बढ़ जाती है—जैसा कि बिस्मिल्लाह खां की शहनाई या वी. जी. जोग के वायलिन बजाने में दिखाई देता है. 'गत अंग' मशीनी हो जाता है, उसमें फिर भाग-दौड़ होने लगती है, स्वरों की मुलायमियत जाती रहती है. पंडित जी के बजाने में 'गायकी अंग' होने से हारमोनियम और भी मधुर लगता है.

पं. चिमोटे जी ने हारमोनियम को नया नाम दिया है. इसे वे 'संवादिनी' कहते हैं. हारमोनियम अंग्रेजी शब्द 'हार्मनी' से निकला है, जिसे पंडित जी ने भारतीय लिबास पहना कर 'संवादिनी' पुकारा. अपनी 'संवादिनी' में उन्होंने कई वर्षों तक शोध-कार्य किया है और उसमें कुछ सुधार भी किये हैं. हारमोनियम में सितार के तार की तरह मींड नहीं निकाली जा सकती, पर पंडित जी ने अपने हारमोनियम से मींड के पूरे आभास को निकालने का अथक परिश्रम किया है. नागपुर में जनमे पं. चिमोटे जी बचपन से ही हारमोनियम से प्रभावित थे. फिर उन्हें स्व. पं. भीष्मदेव बेदी का साथ मिला, जिनसे उन्होंने बहुत कुछ सीखा और बाद में बंबई आने के बाद स्व. लक्ष्मणप्रसाद जयपुरवाले तथा स्व. अमीर खां की संगत ने तो इनकी कला में चार चांद लगा दिये.

हारमोनियम की दुनिया में दो कलाकारों का नाम आज भी याद किया जाता है. वे थे—पं. गोविंदराव टेंबे तथा विट्ठल राव कोरगांवकर, जिन्होंने हारमोनियम बजाने में नयी-नयी बातें पैदा कीं. अपने बचपन में मुझे पं. गोविंदराव टेंबे को बनारस में सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, लेकिन पं. मनोहर चिमोटे ने समय के बदलाव के साथ हारमोनियम बजाने की कला में और भी नयी बातें पैदा कीं. अंत में मैं कहूंगा कि पंडित जी ने अपने कला कौशल से हारमोनियम पर स्वस्थ शास्त्रीय संगीत प्रदर्शित करके हम रसिक श्रोताओं को आनंदविभोर किया.

☐ कृष्णस्वरूप